ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(9): 181-184
www.allresearchjournal.com
Received: 12-06-2023
Accepted: 17-07-2023

एस०एम०अली ईमाम
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर,
दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० एम० हसन
प्राचार्य, डॉ० ज़ाकिर हुसैन टीचर्स
ट्रेनिंग कॉलेज, लहेरियासराय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
एस०एम०अली ईमाम
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग,
ललित नारायण मिथिला
विश्वविद्यालय कामेश्वर नगर,
दरभंगा, बिहार, भारत

मुस्लिम छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक विकास में मदरसा बोर्ड की भूमिका

एस०एम०अली ईमाम, डॉ० एम० हसन

सारांश
भारत में मुसलमानों की एक बड़ी आबादी या तो मदरसों से या उर्दू-माध्यम स्कूलों से शिक्षा प्राप्त कर रही है। मदरसा एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ शैक्षणिक संस्थान होता है। वे कभी भी केवल धार्मिक शिक्षा प्रदान करने तक ही सीमित नहीं रहे। लेकिन इस अवधारणा को बदल दिया गया है और मदरसे केवल धार्मिक शिक्षा का केंद्र बन गये हैं। आजकल हाशिए पर रहने वाले मुस्लिम समुदाय अपने मदरसों से अधिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की मांग कर रहे हैं। लेकिन भारत में अधिकांश मदरसे निजी स्वामित्व में हैं और मदरसा नेताओं को समुदाय की इच्छाओं को पूरा करने की आवश्यकता महसूस नहीं होती है।

कूटशब्द : मदरसा, धार्मिक शिक्षा, मुस्लिम समुदाय

प्रस्तावना
किसी भी राष्ट्र का विकास उसकी शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है और यह सिद्ध है कि शिक्षा मानव प्रगति और सामाजिक परिवर्तन की कुंजी है। शिक्षा व्यक्ति के सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली उपकरण है। यह व्यक्ति और समुदाय में अपनी क्षमताओं, अपने जीवन को आकार देने की अंतर्निहित शक्तियों के बारे में आत्मविश्वास विकसित करने में मदद करता है और इस प्रकार आंतरिक शक्ति को बढ़ाता है। शिक्षा वह साधन है जिसके द्वारा इतिहास में समाजों को उत्पीड़न से लोकतांत्रिक भागीदारी और भागीदारी की ओर बढ़ने के लिए जाना जाता है।
सशक्तिकरण को कम से कम कुछ हद तक जीविका के साधन अधिकार के रूप में उपलब्ध कराने के मामले के रूप में देखा जाता है। हालाँकि सामान्य तौर पर सशक्तिकरण को अपने स्वयं के विकास को बढ़ावा देने के लिए व्यक्तिगत, सांप्रदायिक और सामाजिक वातावरण को नियंत्रित करने में सक्षम बनाने के साधन के रूप में समझा जाता है। इस प्रकार सशक्तिकरण को पहुंच और भागीदारी के मामले के रूप में परिभाषित किया गया है जो हमेशा सशक्त होने की स्थिति से चिंतित होने के बजाय सशक्त होने की एक प्रक्रिया है। शिक्षा भारतीय मुस्लिम छात्र-छात्राओं के सशक्तिकरण की कुंजी है। शिक्षा व्यक्तियों और समुदायों के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक या आध्यात्मिक विकास के लिए सबसे शक्तिशाली कारकों में से एक है। यह व्यक्तियों को समाज में मुख्यधारा के लोगों के स्तर से मेल खाने के लिए आत्मविश्वास और क्षमता हासिल करने में मदद करता है।

किसी समुदाय को सशक्त बनाने के लिए यह आवश्यक है कि समुदाय के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित की जाए। आजकल हाशिए पर रहने वाले मुस्लिम समुदाय अपने मदरसों से अधिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की मांग कर रहे हैं। लेकिन भारत में अधिकांश मदरसे निजी स्वामित्व में हैं, मदरसा नेताओं को सामुदायिक इच्छाओं का जवाब देने की आवश्यकता महसूस नहीं होती है।

मदरसा शिक्षा पुराने पारंपरिक ढर्रे पर ही काम करती दिख रही है क्योंकि इसमें किसी शोध पर जोर नहीं दिया गया है। इसलिए मदरसा शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर शोध परियोजनाएं चलायी जानी चाहिए। मदरसों और जामिया के साथ-साथ आधुनिक विश्वविद्यालयों से जुड़े विद्वानों को मदरसा शिक्षा के क्षेत्र में सार्थक रूप से काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। मदरसे निःशुल्क शिक्षा के केन्द्र हैं। वे मुसलमानों के सांस्कृतिक और शैक्षिक जीवन के केंद्र हैं। पारंपरिक शिक्षा के एक अमूल्य साधन के रूप में इन मदरसों ने मुस्लिम समाज के वंचित वर्गों के बीच साक्षरता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुस्लिम समुदाय का केवल गरीब वर्ग ही अपने बच्चों को मदरसों में भेजने से इनकार करता है, जो न केवल उन्हें मुफ्त शिक्षा प्रदान करते हैं बल्कि मुफ्त भोजन और आवास भी प्रदान करते हैं।

अधिकांश मदरसे आधुनिक शिक्षा शुरू करने के ख़िलाफ़ हैं। हालाँकि, कुछ मदरसों ने धार्मिक शिक्षा के साथ पूरक आधुनिक शिक्षा की शुरुआत की है। हालाँकि, इनमें से अधिकांश मदरसों में छात्रों को आधुनिक धर्मनिरपेक्ष शिक्षा तक पहुँच नहीं है। यदि इन मदरसों में आधुनिक शिक्षा शुरू की जाती है, तो यह निश्चित रूप से छात्रों के बीच आधुनिक और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को बढ़ावा देने की स्थिति पैदा करेगी और उन्हें एक समावेशी समाज में समान भागीदार के रूप में भाग लेने के लिए सशक्त बनाएगी। इन मदरसों को इस्लामी सांस्कृतिक विरासत और सार्वभौमिक मूल्यों को व्यक्त करने के लिए एक माध्यम के रूप में काम करना चाहिए जो मुस्लिम समुदाय की परंपरा, चेतना और पहचान में गहराई से अंतर्निहित हैं।

स्थिति इतनी निराशाजनक हो गई है कि यदि तत्काल उपचारात्मक उपाय नहीं किए गए तो चीजें हाथ से निकल जाएंगी। अच्छी गुणवत्ता वाले सार्वजनिक स्कूलों तक सीमित पहुंच के साथ, बढ़ते पहचान गौरव और सांप्रदायिक पूर्वाग्रहों के कारण, गरीब भारतीय मुसलमान अपने बच्चों को या तो मदरसों में या उर्दू-माध्यम के स्कूलों में भेजते हैं जो मुस्लिम समुदायों की सेवा करते हैं। यह मुस्लिम लड़कियों के माता-पिता के लिए विशेष रूप से सच है जो मानते हैं कि उनकी बेटियाँ उर्दू-माध्यम स्कूल में सुरक्षित रहेंगी।

भारतीय मुस्लिम छात्र-छात्राओं के सशक्तिकरण में मदरसा शिक्षा की भूमिका

हम आज एक प्रतिस्पर्धी दुनिया में रहते हैं, जहां सामान्य रूप से शिक्षा और विशेष रूप से व्यावसायिक शिक्षा की बहुत मांग है। आम लोग आधुनिक शिक्षा के फायदों से अवगत हैं और एक प्रबुद्ध और समावेशी लोकतंत्र के लिए भी यह आवश्यक है कि सभी वर्ग और वर्ग के लोग एक स्वतंत्र राष्ट्र की जिम्मेदारी उठाने के लिए अच्छी तरह से शिक्षित और बौद्धिक रूप से सुसज्जित हों। समकालीन भारतीय संदर्भ में अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमानों के सशक्तिकरण की प्रक्रिया में शिक्षा एक अद्वितीय भूमिका निभाती है। चूंकि मुस्लिम समुदाय दशकों से शैक्षिक रूप से पिछड़ गया है, इसलिए इस समुदाय की शिक्षा को तेज गति से और प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ाना, बढ़ावा देना आवश्यक है। इंडोनेशिया के बाद, भारत दुनिया के किसी भी एक देश में मुसलमानों की सबसे बड़ी संख्या का घर है।

मदरसे धार्मिक शैक्षणिक संस्थान हैं जिनके माध्यम से मुस्लिम समुदाय यह सुनिश्चित करता है कि आने वाली पीढ़ियाँ इस्लाम का ज्ञान प्राप्त करें। ऐतिहासिक उत्पत्ति और उन्हें प्रबंधित करने वालों की धारणा दोनों में मदरसे धार्मिक परंपरा को संरक्षित करने का प्रयास करते हैं और उन्हें पहचान बनाए रखने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में देखा जाता है।

उनमें अपनाई जाने वाली शिक्षा प्रणाली पुरानी है और विशेषज्ञता के वर्तमान माहौल के अनुरूप नहीं है। मुसलमान अपने बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके अपनी नियति को सुधार सकते हैं और अपनी पहचान को सुरक्षित रख सकते हैं। मुस्लिम छात्रों को आधुनिक दुनिया का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को उस दुनिया से निपटने के लिए तैयार और सशक्त बनाना है जिसमें वे रहते हैं, उपलब्ध अवसरों से लाभ उठाने के साथ-साथ आम भलाई में योगदान देना है। मदरसों के प्रबंधक मदरसा शिक्षा के निश्चित लक्ष्यों और उद्देश्यों को लेकर पूरी तरह भ्रमित हैं। मदरसों के लिए कोई समान या वैज्ञानिक पाठ्यक्रम नहीं है। अधिकांश मदरसों में, उचित भवन और शिक्षण उपकरणों सहित प्राथमिक विद्यालय के लिए आवश्यक

बुनियादी ढांचा भी उपलब्ध नहीं है। मदरसे छोटे-छोटे दान और चैरिटी पर निर्भर रहते हैं और उनके पास हर समय नकदी की कमी रहती है। इन मदरसों में परीक्षा और मूल्यांकन की पुरानी व्यवस्था है। मदरसों में छात्र जो सीखते हैं वह काफी हद तक धार्मिक निर्देशों पर आधारित होता है जो उन्हें आज आवश्यक कौशल से लैस करने में विफल रहता है।

भारत में मुसलमानों को यह एहसास होना चाहिए कि वे वास्तव में अंतर्राष्ट्रीयता के युग में शिक्षा के निचले स्तर को तोड़ रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से आगे सांस्कृतिक प्रसारण ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को एक-दूसरे के बहुत करीब ला दिया है। अपने जीवन की अखंडता, शांति और समृद्धि और बुनियादी सुरक्षा प्राप्त करने के लिए, मुस्लिम समुदाय को सामान्य रूप से अपनी शिक्षा प्रणाली और विशेष रूप से मदरसा शिक्षा के पुनर्गठन के कार्य पर अपने प्रयासों को केंद्रित करना चाहिए। मदरसा शिक्षा के संबंध में, समुदाय के धार्मिक आधार पर जोर देने के बीच नाजुक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है, जिस पर मुस्लिम समुदाय विशेष जोर देता है, और शिक्षा को समुदाय को सशक्त बनाने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बनाने की आवश्यकता है। देश की शैक्षिक और विकासात्मक मुख्यधारा में अपने वैध स्थान का दावा करें। आधुनिक विश्व की चुनौती से निपटने के लिए मदरसों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता होगी। शिक्षा की गुणवत्ता और विज्ञान, सूचना एवं प्रौद्योगिकी का आधार बढ़ाने पर ज़ोर देना होगा। मदरसों को आधुनिक बहुलवादी, धर्मनिरपेक्ष और समावेशी समाज में इस्लामी शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर ध्यान देना चाहिए।

पारंपरिक इस्लामी विषयों और विषयों के साथ-साथ राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसार विषयों की सामग्री को मिलाकर एक एकीकृत पाठ्यक्रम की आवश्यकता है। पिछड़े अल्पसंख्यकों की शिक्षा पर विशेष ध्यान राष्ट्रीय शिक्षा नीति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है और इस उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए अतीत में कई योजनाएं शुरू की गई हैं। शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के लिए क्षेत्र गहन कार्यक्रम, उर्दू शिक्षकों और अंशकालिक अरबी/फारसी शिक्षकों की नियुक्ति के लिए मदरसा शिक्षा योजना का आधुनिकीकरण उनमें से कुछ हैं। अब समय आ गया है कि एक नए दृष्टिकोण का प्रयास किया जाए जिसमें इन सभी योजनाओं को एकीकृत तरीके से लागू किया जाए। मदरसों में आधुनिक शिक्षा की शुरूआत से छात्र के संपूर्ण व्यक्तित्व के संतुलित विकास में मदद मिलेगी और एक सहिष्णु और समावेशी समाज का निर्माण होगा। मदरसों के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा का लक्ष्य प्रत्येक छात्र का सर्वांगीण और समग्र विकास होना चाहिए। यह और भी महत्वपूर्ण है क्योंकि मदरसे मुस्लिम समुदाय के भावी धार्मिक नेताओं को बढ़ावा देने की नर्सरी हैं। इसके लिए अन्य बातों के अलावा, खेल-कूद और सामुदायिक/सामाजिक सेवा जैसी बाहरी गतिविधियों के माध्यम से स्वस्थ भौतिक संस्कृति को बढ़ावा देने पर जोर देने की आवश्यकता होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों के उत्थान के लिए हर संभव साधन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। शैक्षिक रूप से पिछड़े मुस्लिम अल्पसंख्यकों के बच्चे मदरसों में पढ़ते हैं, जिनकी राष्ट्रीय मुख्यधारा की शिक्षा प्रणाली में बहुत कम भागीदारी है। उन्हें आधुनिक विषयों में शिक्षा तक पहुंच प्रदान करने के लिए, केंद्र सरकार क्षेत्र गहन और मदरसा आधुनिकीकरण योजना लागू कर रही है। ये मुस्लिमों के सशक्तिकरण के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई विभिन्न योजनाएं हैं, लेकिन इन्हें सफलतापूर्वक लागू नहीं किया गया।

मदरसा शिक्षा प्रणाली की कुछ प्रमुख एवं महत्वपूर्ण कमियाँ निम्नलिखित हैं:

- निश्चित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का अभाव।
- कुछ मदरसों में उचित भवन, कक्षा और विशेष रूप से फर्नीचर, ब्लैक बोर्ड और अन्य उपकरणों जैसी बुनियादी सुविधाओं का अभाव।
- शिक्षण और सीखने की पुरानी पारंपरिक पद्धतियाँ और तकनीक।
- प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में आधुनिक विकास से अलगाव और पारंपरिक विषयों पर अत्यधिक जोर, आधुनिक विषयों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण।
- विभिन्न मदरसों और मकतबों के बीच समन्वय का अभाव।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन की दोषपूर्ण प्रणाली।
- योजना और प्रशासन की खराब गुणवत्ता।
- खराब वित्तीय स्थिति और प्रबंधन।

मदरसा शिक्षा में सुधार के लिए कुछ सुझाव

- सबसे पहले, इस देश में मदरसा शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्यों को विशेष रूप से अच्छी तरह से परिभाषित किया जाना चाहिए।

- मदरसों का दायरा धार्मिक शिक्षा से आगे बढ़ाकर स्कूल में विज्ञान, गणित, अंग्रेजी और कंप्यूटर जैसे विषयों को पढ़ाना।
- एक ऐसी व्यवस्था जिसके तहत मुस्लिम छात्र धार्मिक और स्कूली शिक्षा दोनों प्राप्त करने में सक्षम हो सकें, यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि उनकी शिक्षा कम से कम आठवीं कक्षा तक पूरी हो।
- मकतबों और मदरसों के लिए ढांचागत विकास बहुत महत्वपूर्ण है, जैसे कक्षाएं, फर्नीचर, ब्लैकबोर्ड आदि।
- मदरसों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी पर जोर देते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए।
- जो शिक्षक मदरसा शिक्षा से जुड़ना चाहते हैं उनके लिए शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का प्रावधान होना चाहिए। उन्हें या तो विश्वविद्यालयों से संबद्ध मौजूदा प्रशिक्षण संस्थानों में समायोजित किया जाना चाहिए, या उनके लिए प्रशिक्षण की एक अलग प्रणाली होनी चाहिए।
- इन मदरसों और मकतबों के लिए पर्याप्त अनुदान प्रदान करना केंद्र और राज्य सरकार की जिम्मेदारी होनी चाहिए।
- मुस्लिम बच्चों को राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के मानकों को प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए मदरसों के सभी स्तरों पर पुस्तकों और शिक्षण शिक्षण सामग्री की उपलब्धता आवश्यक है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन भारतीय मुसलमानों की वर्तमान शैक्षिक स्थिति, स्कूलों/मदरसों में उनके नामांकन, मदरसा शिक्षा और मुसलमानों के सशक्तिकरण में इसके योगदान पर प्रकाश डालता है; भारत सरकार द्वारा की जा रही महत्वपूर्ण पहल, इन मदरसों की समस्याएं और भारतीय मदरसों की शैक्षिक स्थिति में सुधार के लिए कुछ सुझाव। आधुनिक विश्व की चुनौती से निपटने के लिए मदरसों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता होगी। शिक्षा की गुणवत्ता और विज्ञान, सूचना एवं प्रौद्योगिकी का आधार बढ़ाने पर ज़ोर देना होगा, क्योंकि प्रतिस्पर्धा के हमारे वर्तमान युग की यही ज़रूरत है। इन मदरसों का योगदान इतना महत्वपूर्ण रहा है कि कोई भी समुदाय के लिए उनकी सेवाओं की उपेक्षा या अनदेखी करके मुस्लिम छात्र-छात्राओं शैक्षिक विकास की रणनीति नहीं बना सकता है। ये मदरसे एक समानांतर शिक्षा प्रणाली बनाते हैं जो इसका सहारा लेने वाले मुसलमानों के आर्थिक विकास और समृद्धि की राह को पूरी तरह से अवरुद्ध कर देता है और परिणामस्वरूप मुसलमान भारत में सबसे पिछड़ा धार्मिक समुदाय हैं। इसलिए भारत में मदरसा शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाने या उसमें सुधार करने की तत्काल आवश्यकता है ताकि मुसलमानों को उस स्तर पर शिक्षित किया जा सके जिससे उन्हें बच्चों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली से प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिल सके। इससे मुस्लिम बच्चों का आत्मविश्वास विकसित होगा और साथ ही भारत में पूरे मुस्लिम समुदाय के सशक्तिकरण में भी मदद मिलेगी।

संदर्भ

1. बेग, एम.ए. और किदवई, ए.आर. (2012)। भारतीय मुसलमानों का सशक्तिकरण: परिप्रेक्ष्य योजना और आगे की राह। कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी प्रा. लिमिटेड
2. कादरी, ए.डब्ल्यू. एट अल (1998) आज़ादी के बाद से भारत में शिक्षा और मुसलमान। वस्तुनिष्ठ अध्ययन संस्थान, नई दिल्ली।
3. जैन, एस. (1986). मुस्लिम और आधुनिकीकरण. जयपुर: रावत प्रकाशन।
4. मोंडेल, एस.आर.(1997)। मुसलमानों की शैक्षिक स्थिति: समस्याएँ संभावनाएँ और प्राथमिकताएँ, इंटर इंडिया प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. सच्चर समिति रिपोर्ट (2006)। भारत के मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति। प्रधान मंत्री की उच्च स्तरीय समिति, भारत सरकार
6. इरफ़ान, एन. और वैली, जेड.ए.(1995)। शिक्षा और मुस्लिम विश्व: चुनौती और प्रतिक्रिया। नीति अध्ययन संस्थान इस्लामिक फाउंडेशन, यू.के.